

Padma Shri



DR. CHANDRAKANT SAMBHAJI PANDAV

Dr. Chandrakant Sambhaji Pandav is the former Professor and Head of the Department of Centre for Community Medicine (CCM) at the All India Institute of Medical Sciences (AIIMS), New Delhi. Dr. Pandav is presently Member of the National Council on India Nutrition Challenges under POSHAN Abhiyan which is chaired by the Vice-chairman of NITI Aayog.

2. Born on 3rd November, 1951, in Solapur district, Maharashtra, Dr. Pandav started his schooling in 1957 in Jeevan Shikshan Mandir, Solapur. He then continued his education at National Model School, Aga Khan Palace, Pune, and Sir Parashurambhau College, Pune. Dr. Pandav completed his MBBS and MD in Community Medicine from AIIMS New Delhi and M.Sc. from McMaster University Hamilton Canada with specialization in Health Economics, Clinical Epidemiology and Biostatistics. Dr. Pandav is also an Alumnus of the Department of Human Nutrition at the London School of Hygiene and Tropical Medicine.

3. Dr. Pandav is known as the "Iodine Man of India" as he has been a relentless crusader in the fight for sustainable elimination of Iodine Deficiency Disorders (IDD), the single most important cause of mental handicap worldwide according to WHO. His research and advocacy has contributed enormously to the success of the National Iodine Deficiency Disorders Control Programme and mandatory Universal Salt Iodization not only in India but worldwide. Iodised salt coverage in India has increased from less than 5% in the 1980s to 93% in 2018-2019. Dr Pandav's work subsequently led to the concept, "Extra - Himalayan fortification of Endemic Goitre" of endemic goitre. He has conducted in-depth economic evaluation of the IDD control programme and has provided conclusive evidence for cost-effectiveness and cost-benefit of IDD control interventions in programme mode.

4. Dr. Pandav is the founding member of the Iodine Global Network recognized by the World Health Assembly as an International Non-governmental Organisation (INGO) and has been the Regional Coordinator South Asia, since 1985. He has been a consultant to the World Health Organization and UNICEF on Iodine Deficiency Disorders since 1983 in over 60 countries in South Asia, Western Pacific, Middle East and Africa. Dr. Pandav has been widely recognized in the areas of Iodine Deficiency Disorders Micronutrients Health Systems Research, Health Economics Health Policy Health Programme Evaluation Public-Private Partnership and Human Rights Issues. He is co-editor of 14 books on Health Sciences and has authored over 600 research papers published in various national and international journals. A few of his notable books are "Elimination of Iodine Deficiency Disorders: Yes, it's a worthwhile investment", and "SOS for a Billion".

5. Dr. Pandav has received numerous national and international honours and awards that include the prestigious Dr. M.K. Seshadri Prize and Gold Medal by Indian Council Medical Research in 2000 for his outstanding contributions to the field of Community Medicine. In 2001 he became a Fellow at the National Academy of Medical Sciences New Delhi and Fellow of the Royal Institute of Public Health and hygiene and Society of Public Health London. The Mother Teresa Memorial Award in 2016 for his excellent work in the area of Universal Salt Iodization. In 2017 Dr. Pandav was bestowed the WHO Public Health Champion Award for his long and sustained contribution to public health through advocacy for and involvement in impactful health policies, strategies and programmes with proven public health achievements and substantial improvement in health outcomes with equity in the country.



डॉ. चंद्रकांत संभाजी पांडव

डॉ. चंद्रकांत संभाजी पांडव अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स), नई दिल्ली के सामुदायिक औषधि केंद्र (सीसीएम) विभाग के पूर्व प्रोफेसर और विभागाध्यक्ष हैं। वह वर्तमान में नीति आयोग के उपाध्यक्ष की अध्यक्षता वाले पोषण अभियान के तहत राष्ट्रीय पोषण चुनौती परिषद के सदस्य हैं।

2. महाराष्ट्र के सोलापुर जिले में 3 नवम्बर 1951 को जन्मे, डॉ. पांडव की शिक्षा 1957 में जीवन शिक्षण मंदिर, सोलापुर से प्रारंभ हुई। बाद में उनकी शिक्षा नेशनल मॉडेल स्कूल, आगा खान पैलेस, पुणे और सर परशुराम बाहु महाविद्यालय, पुणे में जारी रही। उन्होंने कम्प्युनिटी मेडिसिन में अपनी एमबीबीएस और एमडी, एम्स, नई दिल्ली से की और एमएससी की डिग्री स्वास्थ्य अर्थशास्त्र, नैदानिक महामारी-विज्ञान और जैव-सांख्यिकी में विशेषज्ञता के साथ मैकमास्टर विश्वविद्यालय, हेमिल्टन, कनाडा से प्राप्त की। वह लंदन स्कूल ऑफ हाइजिन एंड ट्रॉपिकल मेडिसिन के मानव पोषण विभाग के पूर्व-छात्र भी हैं।

3. डॉ. पांडव "आयोडिन मैन ऑफ इंडिया" के नाम से प्रसिद्ध हैं क्योंकि वे आयोडिन की कमी से होने वाले विकारों को सतत रूप से खत्म करने के अभियान के अथक योद्धा रहे हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, आयोडिन की कमी विश्वभर में मानसिक विकलांगता उत्पन्न करने का अकेला सबसे बड़ा कारण है। भारत में नेशनल आयोडीन डेफिशियेंसी डिसऑर्डर कंट्रोल प्रोग्राम तथा भारत के साथ-साथ पूरे विश्व में अनिवार्य सार्वभौमिक नमक आयोडिनीकरण की सफलता का श्रेय उनके अनुसंधान और परामर्श को जाता है। भारत में आयोडाइज्ड नमक का कवरेज वर्ष 1980 में 5: था जो कि वर्ष 2019-20 में बढ़कर 93: हो गया। उनके अनुसंधान कार्य से घेंघा महामारी की "एक्सट्रा हिमालयन फोर्टिफिकेशन ऑफ एंडेमिक गोएटरे" की संकल्पना को बल मिला। उन्होंने आयोडिन की कमी से होने वाले विकार (आईडीडी) नियंत्रण कार्यक्रम का गहन आर्थिक मूल्यांकन किया और कार्यक्रम पद्धति में आईडीडी नियंत्रण प्रयासों के किफायती और लागत-लाभकारी होने के दोस साक्ष्य प्रस्तुत किए हैं।

4. डॉ. पांडव आयोडिन ग्लोबल नेटवर्क के संस्थापक सदस्य हैं जिसे विश्व हेल्थ असेंबली द्वारा एक अंतरराष्ट्रीय गैर-सरकारी संगठन (आईएनजीओ) के रूप में मान्यता प्रदान की गई है। वह 1985 से दक्षिण एशिया के क्षेत्रीय संयोजक हैं। वह वर्ष 1983 से आयोडिन की कमी से होने वाले विकारों पर दक्षिण एशिया, पश्चिम प्रशांत, मध्य पूर्व और अफ्रीका के 60 से अधिक देशों में विश्व स्वास्थ्य संगठन और यूनिसेफ के सलाहकार रहे हैं। उनको आयोडिन डेफिशियेंसी डिसऑर्डर मैक्रोन्यूट्रीएंट्स हेल्थ सिस्टम रिसर्च, स्वास्थ्य आर्थिकी, स्वास्थ्य नीति, स्वास्थ्य कार्यक्रम मूल्यांकन, सार्वजनिक-निजी भागीदारी और मानवाधिकार मुद्दों के क्षेत्र में व्यापक ख्याति प्राप्त है। वह स्वास्थ्य विज्ञान विषय पर 14 पुस्तकों के सह-लेखक हैं और उन्होंने 600 से अधिक शोधपत्र लिखे हैं जो विभिन्न राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय जर्नलों में प्रकाशित हुए हैं। उनकी कुछ उल्लेखनीय पुस्तकों में "एलिमिनेशन ऑफ आयोडिन डिफिशियेंसी डिसऑर्डर: यस इट्स ए वर्थवाइल इनवेस्टमेंट" और "एसओएस फॉर ए बिलियन" शामिल हैं।

5. डॉ. पांडव को अनेक राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय सम्मान और पुरस्कार प्राप्त हुए हैं जिनमें सामुदायिक औषधि के क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए वर्ष 2000 में प्रतिष्ठित डॉ. एम. के. शेषाद्री पुरस्कार और भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद द्वारा स्वर्ण पदक शामिल हैं। वर्ष 2001 में वह राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान अकादमी, नई दिल्ली के फेलो और रॉयल इंस्टीट्यूट ऑफ पब्लिक हेल्थ एंड हाइजिन और सोसाइटी ऑफ पब्लिक हेल्थ लंदन के फेलो बने। उन्हें सार्वभौमिक नमक आयोडिनीकरण के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए वर्ष 2016 में मदर टेरेसा मेमोरियल पुरस्कार प्रदान किया गया। उनको प्रमाणित जन स्वास्थ्य उपलब्धियों और देश में समतापूर्ण उपचार में उल्लेखनीय सुधार के द्वारा प्रभावी स्वास्थ्य नीतियों, कार्यनीतियों और कार्यक्रमों के लिए और इनमें शामिल रहते हुए परामर्शी सेवाओं के जरिए जन स्वास्थ्य में लंबे समय से निरंतर योगदान के लिए वर्ष 2017 में विश्व स्वास्थ्य संगठन का जन स्वास्थ्य चैंपियन पुरस्कार प्रदान किया गया।